

भारतीय साहित्य एवं कला में राम: अंतः सम्बन्ध

कविता भारती ¹, हेमलता अग्रवाल ²

¹ शोधार्थिनी, एसो. प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

² प्रोफेसर, शोध निर्देशिका, विभागाध्यक्षा, चित्रकला विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12367>

सारांश

राम भारतीय संस्कृति और चित्रकला के लोकप्रिय चरित्र हैं। साहित्य, चित्र, संगीत, मूर्ति, नाट्य आदि के प्रिय विषय राम और राम कथा प्रत्येक युग में प्रासंगिक है। वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस व विभिन्न क्षेत्रीय रामकथाओं में वर्णित राम का चरित्र उच्चतर मानव मूल्यों का पर्याय है। भारत की विविध कलाओं में उन्हें समाज की शीर्षस्थ विभूति के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य एवं कला में वे पहले ऐसे चरित्र नायक हैं जिनके द्वारा भारत को विश्व पटल पर सांस्कृतिक पहचान प्राप्त हुई है। मध्यकालीन साहित्य एवं कला में राम के विविध रूपों का निरूपण अपने पूर्ण कलात्मक सौन्दर्य के साथ हमें देखने को मिलता है फिर चाहें वह रीतिकाल हो या कला की राजस्थानी, मुगल एवं पहाड़ी शैलियाँ। आधुनिक भारतीय समकालीन कला में राम के विविध रूप हमारे सामने आने प्रारम्भ हुए हैं जिसमें परम्परागत शैलियाँ साथ साथ नवीन प्रयोगात्मक पद्धतियों में भी हमें राम का चित्रण देखने को मिलता है। अभी तक हम प्रायः राम के परम्परागत स्वरूप से ही परिचित रहे हैं परन्तु नयी विधाओं एवं प्रवृत्तियों के आने से कलाकार इस विषय में नवीन कार्य रहे हैं। जो परम्परागत चित्रण से पर्याप्त भिन्न हैं। राम का निरंतर परिवर्तित होता कलात्मक स्वरूप भारतीय कला की विविधता को व्यक्त करता है। राम के कलात्मक स्वरूप में हो रहे नित नवीन परिवर्तन इस विषय को जीवन्तता प्रदान करते हैं।

मूल शब्द: राम, रामायण, रामकथा, रामचरितमानस, विधाओं, विविधता, कलात्मक, समकालीन

प्रस्तावना

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतीय साहित्यिक परम्परा विश्व की सबसे पुरानी परम्परा है, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में पिरोये हुए है। भारत वर्ष अनेक भाषाओं का विशाल देश है। उत्तर पश्चिम में पंजाबी, हिन्दी और उर्दू, पूर्व में उड़िया, बंगाल में बंगाली, असम में मध्य पश्चिमी में मराठी और गुजराती और दक्षिण में तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम् इनमें से प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य है जो प्राचीनता, वैविध्य, गुण और परिणाम की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध हैं। वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश का भी इसमें समावेश हो जाने पर इसका विस्तार अनन्त हो जाता है। भारतीय भाषाओं की साहित्यिक सांस्कृतिक भावभूमि एक ही है। इस दृष्टि से भारतीय साहित्य सदैव से ही समृद्ध रहा है। इसके कोश में देश की प्राचीनतम परम्पराएं संचित हैं जो जन मानस की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। समय-समय पर इस साहित्य में रामायण, महाभारत, पुराण, वास्तुशास्त्र, रामचरित मानस, अर्थशास्त्र आदि कालजयी रचनाएं लिखी गयीं। इन रचनाओं में रामायण का कथानक साहित्य एवं कला को अविरल प्रवाह प्रदान करता है। रामकथा को आधार बनाकर विपुल साहित्य की रचना हुयी है, जिसे हम संस्कृत साहित्य, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, हिन्दी साहित्य और आदिवासी साहित्य में विभक्त कर उसका अनुशीलन करने के पश्चात् ही साहित्य में राम व उनके कलात्मक स्वरूप से परिचित हो सकते हैं।

रामकथा की परम्परा

रामकथा विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है वैदिक युग से लेकर आज तक भारत वर्ष ही क्या, विश्व की प्रत्येक महत्वपूर्ण भाषा में रामकाव्य की रचना मिलती है आज रामकाव्य पर आश्रित काव्य जितना समृद्ध है उतना अन्य किसी विषय पर रचित साहित्य नहीं है। रामकथा का मूल प्रमाणिक रूप राम के समकालीन कवि

महर्षि वाल्मीकि रामायण में प्राप्त होता है। वस्तुतः रामायण ही रामकथा की गंगोत्री है। जहाँ से रामकाव्य धारा का अमर अक्षय प्रवाह फूटता है और प्रवाहमान होकर भारत भूमि को उर्वर बनाता है। इस महाकाव्य का सौन्दर्य जितना मनोहारी है उतना ही उत्कृष्ट और कलात्मक भी है। संस्कृत साहित्य की अतीत काव्य कृतियों पर दृष्टिपात करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस साहित्य में रामकथा के आधार पर काव्य, महाकाव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य, कथानात्मक चम्पु लिखे गये हैं। वस्तुतः संस्कृत साहित्य में रामकथा का अपार भण्डार भरा हुआ है। महर्षि वाल्मीकि अथवा महाकवि कालिदास से लेकर अद्यावधि विविध कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र को अपनी काव्य कृतियों का वर्णन विषय बनाया है।

संस्कृत में पुराण साहित्य, काव्य साहित्य एवं नाट्य साहित्य इन तीनों रूपों में रामकाव्य की परम्परा के दर्शन होते हैं। इस कथानक में राम के अवतार रूप व राम के वनगमन से लेकर रावण-वध तक की कथा का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण के पश्चात् महाभारत के अरण्य पर्व में हनुमान द्वारा राम के वनवास से लेकर अयोध्या लौटने तक की कथा का वर्णन किया है, जिनके आधार पर बनी कलाकृतियों का कलात्मक पक्ष सौन्दर्यमयी एवं प्रशंसनीय है। जो मध्यकालीन चित्तेरों का प्रिय विषय रहा है।

रामकथा न केवल संस्कृत भाषा में अपितु हिन्दी भाषा की विभिन्न शैलियों में अपने पूर्ण सौष्ठव के साथ विद्यमान है। गद्य एवं पद्य दोनों माध्यमों में रामकथा लिखी गयी है। रामकथा ने हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कवियों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इस समय आदिकवि महर्षि की वाल्मीकि रामायण में राम के आलौकिक चरित्र को जिसने भी पढ़ा या सुना वह इसमें आनन्द लेने लगा, असत्य पर सत्य की विजय का आदर्श जन मानस में सामाजिक प्रेरणा का आधार बना। इसी के अविभूत होकर कवि श्रेष्ठ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरित मानस'

में राम के पावन आदर्शों एवं पुनीत चरित्र का पुनर्स्थापन किया गया है। इसके साथ ही अवधी व ब्रजभाषा में रचित विनय पत्रिका, रामचन्द्रिका, गीतावली, सूर-सूरावली आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। जो लोकभाषा में होने के कारण जन सामान्य के लिए अधिक सहज व सुगम्य हो गयी, जिनमें असुरी प्रवृत्ति पर उत्तम प्रवृत्तियों की विजय का भाव विशेष था। रामकथा में वर्णित चरित्रों के साथ-साथ श्रीराम के ऐसे मर्यादा स्वरूप चरित्र का वर्णन है, जो दैवीय गुणों से सम्पन्न होने के बावजूद एक आदर्श उत्तम पुरुष पुरुषोत्तम व्यक्ति का रूप था।

श्रीराम की उत्कृष्ट कथा ने जो ख्याति और व्याप्ति पाई उससे लोगों का सांस्कृतिक व कलात्मक पक्ष भी अछूता नहीं रह सका। साहित्य, संगीत, मूर्ति एवं चित्रकला सभी पर रामकथा का व्यापक प्रभाव पड़ा। ललित कलाओं के साथ-साथ कला में प्रचलित शैलियों पर भी राम कथा ने अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ा है।

राम चित्रण परम्परा

राम के कलात्मक स्वरूप का चित्रण प्रारम्भ से ही कलाकारों व जन सामान्य का प्रिय विषय रहा है। चित्रित रूप में सर्वप्रथम बौद्ध व जैन कलाओं में बनाई गयी पाण्डुलिपियों में राम की कथा के चित्र प्राप्त होते हैं। जैन धर्म में विमलसूरि कृत 'पउम-चरित' का चित्रण प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म में भी राम को 'बोधिसत्व' मानकर रामकथा को जातक कथाओं में स्थान दिया गया है। राम को 'बलदेव' के नाम से चित्रित किया गया है। यह चित्र तत्कालीन प्रचलित बौद्ध एवं जैन शैली में बनाये गये हैं।

इसके पश्चात् रामकथा का चित्रित समृद्ध, कलात्मक एवं सौन्दर्य पूर्ण चित्रण हमें कला की छः शैलियों में प्राप्त होता है, जिसमें प्रथम है-रामकथा चित्रों की बुन्देलखण्डी शैली, द्वितीय है-रामकथा चित्रों की राजस्थानी शैली, तृतीय है-रामकथा चित्रों की मुगल शैली, चतुर्थ है-रामकथा चित्रों की केरल शैली, पांचवी है-रामकथा चित्रों की पूर्वोत्तरी शैली और छठी है-उत्तरी पहाड़ी शैली। इन सभी शैलियों में पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित मुगल चित्रकृतियों में रामकथा को मुगल रामायण का विषय बनाकर किया गया जो चित्रांकन उपलब्ध है उसमें 'स्वर्णमृग का पीछा करते हुए श्रीराम, 'श्रीराम अंगद मिलन' (जिसकी पृष्ठभूमि में ब्रह्मा, विष्णु, महेश दिखाये गये हैं) 'महर्षि विश्वामित्र के आश्रम

में तोड़फोड़ करने वाले राक्षसों का राम द्वारा संहार' आदि प्रमुखतः चित्रांकन का विषय बने हैं। इन चित्रों में रामकथा की निरन्तरता तो है ही, रंग प्रयोग और वातावरण को सजीव बनाने की दृष्टि से भी लघुचित्र शैली की ये कृतियाँ सबल बनी हैं। इनमें गति है, सरसता है और आंखों को भाने वाली सुहानी रंग योजना का समावेश है। यह चित्र मुगल रामायण के नाम से जाने जाते हैं इसमें 176 चित्र हैं जो वर्तमान में सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय जयपुर में सुरक्षित हैं। परम्परागत राजस्थानी शैली के अंतर्गत ही उदयपुर शैली में राम कथा विषयक चित्र जो मध्य सोलहवीं शताब्दी में निर्मित किये गये थे, कला-संग्राहकों के पास आज भी उपलब्ध होते हैं। इनमें श्रीराम के बचपन, श्रीराम विवाह, लक्ष्मणजी के साथ नगर दर्शन तथा राम-वन-गमन आदि प्रसंगों पर बने चित्र तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की सुन्दर झांकी प्रस्तुत करने वाले चित्र हैं। ये चित्र लघुचित्र शैली पर रामकथा के व्यापक प्रभाव को उजागर करते हैं। जो यह चित्रण सूरदास की सूरसागर एवं महर्षि बाल्मीकि रामायण पर आधारित है।

पहाड़ी चित्रकला की जम्मू शैली भारतीय लघुचित्रों के संदर्भ में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इस चित्रण का मुख्य आधार रामायण एवं श्रीराम चरितमानस साहित्यिक रचनाएं रही हैं। रामकथा पर बने बहुसंख्य चित्रों का प्रभाव इस शैली पर भी पड़ा है। श्री आनंदकुमार स्वामी के संग्रह में उपलब्ध चित्रों में जो काल-निर्णय की गणित के अनुसार सत्रहवीं शताब्दी (पूर्वार्द्ध) के हैं, श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण तथा रावण के व्यक्ति चित्रों के अतिरिक्त लंकादहन चित्रों की एक लंबी श्रंखला मिलती है। इसी में श्रीराम द्वारा राक्षस संहार, अशोक वाटिका में राम वियोग से व्याकुल सीता का शोक, अशोक वाटिका में पहुँच कर रावण द्वारा सीता को अपना स्वामित्व स्वीकार करने का आग्रह, राम की वानर सेना द्वारा लंका पर चढ़ाई, लक्ष्मण की मूर्छा आदि रामकथा संदर्भों का सफल अंकन हुआ है। इन चित्रों में शिल्प कुशलता अत्यन्त समृद्ध व इनकी रंग योजना आकर्षक और कलात्मक है। साथ ही बसोहली गुलेर, कागंडा, चम्बा, कूल्लू, मानकोट आदि शैलियों में श्रीराम कथा का सचित्र अंकन साहित्य के आधार पर प्राप्त होता है।



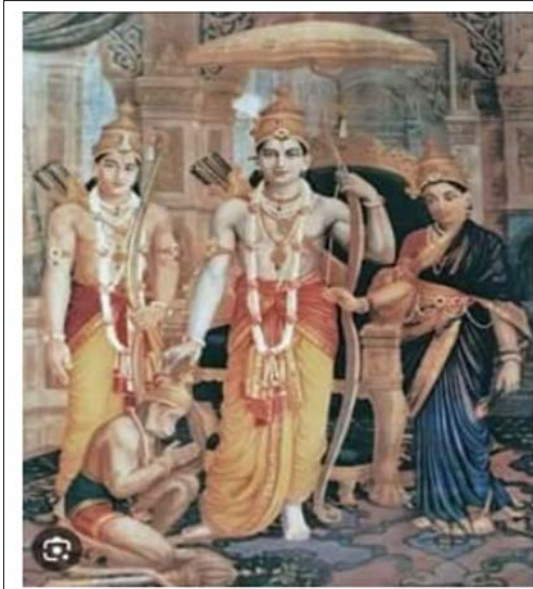
राम बसौली शैली



वन में राम और सीता काँगड़ा शैली

यथार्थवादी शैली में रामकथा की सबल अभिव्यक्ति हुई है, गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'रामायण' व 'रामचरित मानस' व रामकथा से सम्बद्ध अन्य चित्रों में जो स्वरूप बनाये गये हैं, उनमें राजा रवि वर्मा द्वारा बनाये गये, 'राम दरबार' व 'सूर्पनखा की

नाक काटते हुए' एवं 'अशोक वाटिका' आदि चित्र बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। इसी काल में चित्रकार नन्दलाल बोस, देवलालीकर, यामिनीराय तथा माधव सातवलेकर के चित्र भी कला में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिसमें पर्याप्त विविधता देखने को मिलती है।



राम दरबार राजा रवि वमा



धनुषधारी राम लोक कला शैली नन्दलाल बोस

आधुनिक कला के युग में भी रामकथा का प्रभाव कम नहीं हुआ। वर्तमान चित्रकला के इतिहास की यह बहुत बड़ी घटना है कि घोर प्रयोगवादी दिशा में काम करने वाले आधुनिक कलाकार भी रामकथा के अंकन की ओर आकर्षित हुए। आधुनिक कलाकार मकबूल फिदा हुसैन ने रामकथा प्रसंगों पर बहुत से चित्रों की एक सीरीज तैयार की। 'रामचरित मानस' के प्रसंगों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर उसका एक नया कलात्मक भाष्य प्रस्तुत

किया। हुसैन ने एक नई चित्र-रामायण का सृजन किया। इस तरह रामकथा एक नये रंग, नये संस्कार के रूप में सामने आई। वर्तमान में डिजिटल कला व ए0आई द्वारा अनेकों कलाकारों ने राम का विषय बनाकर अनेकों कृतियों का निर्माण किया है के वेंकट रमन सिंह श्याम ने अपनी गौड शैली में राम व लक्ष्मण को आधुनिक परिधानों एवं शस्त्रों से सुसज्जित दिखाया है।



एम.एफ. हुसैन प्रयोगवादी शैली



समसामायिक शैली



गौड शैली

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य में राम का स्वरूप निरंतर विकसित होने वाली सांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम है। बाल्मीकि रामायण में राम का जो प्रारंभिक साहित्य व्यक्तित्व सामने आता है, वह आगे चलकर विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों, धार्मिक परंपराओं और लोक-संस्कृतियों में अनेक रूप ग्रहण करता है। तुलसीदास की रामचरितमानस ने जहाँ राम को भक्तिपरक आराध्य के रूप में व्यापक जनमानस से जोड़ा वहीं क्षेत्रीय रामकथाओं ने उनके स्वरूप में स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनाओं का समावेश किया।

राम के साहित्यिक रूप ने भारतीय कला को भी अत्यंत समृद्ध किया। पांडुलिपि-चित्रण लघुचित्रण, पहाड़ी चित्रकला, राजस्थानी एवं मध्य चित्रकला तथा लोककला में राम के विभिन्न रूप साहित्यिक कथाओं के दृश्य रूपांतरण के उदाहरण हैं। साहित्य के साथ ही कला में भी राम कभी बनवासी, कभी धनुष-बाण धारी योद्धा, कभी आदर्श राजा, कभी सीता के पति, कभी हनुमान के आराध्य और कभी दिव्य स्वरूप में विराजमान दिखाई देते हैं।

इस शोध पत्र के माध्यम से किये गये अध्ययन का निष्कर्ष यह भी है कि राम के कलात्मक स्वरूप को किसी एक स्थिर प्रतिमा या निश्चित दृश्य-रूप में बाँधना संभव नहीं है। प्रत्येक काल, क्षेत्र और कलाकार ने साहित्य से प्राप्त रामकथा को अपनी सांस्कृतिक दृष्टि से पुनः निर्मित किया। इसीलिए बसौली के राम, मेवाड़ के राम, पहाड़ी चित्रों के राम, लोकपट के राम और आधुनिक चित्रकारों के राम अपनी दृष्ट भाषा में अलग अलग दिखाई देते हैं, जबकि उनके पीछे सांस्कृतिक रूप से विराजमान मूल स्मृति ही रामकथा का अविकल रूप दर्शाती है। प्रतीक रूप में राम के धनुष-बाण, मुकुट, चरण-पादुका, कमल, सीता, हनुमान, अयोध्या और वन यह प्रमाणित करते हैं कि साहित्यिक कथानक जब दृश्य प्रतीकों में बदलते हैं तो साहित्य केवल कला के लिए विषय-वस्तु उपलब्ध नहीं कराता, बल्कि कला की प्रतीकात्मक भाषा को भी प्रभावित करता है।

राम का बदलता साहित्यिक स्वरूप भारतीय कला में भी परिवर्तन का आधार बना। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय

साहित्य में राम और उनका कलात्मक स्वरूप एक-दूसरे से गहरे अंतःसंबंधित हैं। साहित्य ने राम के चरित्र, आदर्श, घटनाओं और प्रतीकों को निर्मित किया, जबकि कला ने उन्हें दृश्य रूप दिया। आधुनिक और समकालीन संदर्भ में राम का स्वरूप परम्परा और वर्तमान के सेतु का काम करता है। समकालीन कलाकार पारम्परिक राम-प्रतीकों को बनाए रखते हुए उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यबोध दे रहे हैं। राम का कलात्मक विकास केवल अतीत के धार्मिक चित्रण का अध्ययन नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की बदलती चेतना और कलात्मक अभिव्यक्ति के विकास को समझने का भी महत्वपूर्ण साधन है।

अंततः श्रीराम भारतीय साहित्य और कला के ऐसे सांस्कृतिक प्रतीक हैं जिनकी शक्ति उनकी स्थिरता में ही नहीं, बल्कि उनके निरंतर पुनर्पाठ और पुनर्सृजन में निहित है। यही कारण है कि प्राचीन महाकाव्य से लेकर क्षेत्रीय साहित्य, लोककला, लघुचित्र और समकालीन चित्रकला तक राम आज भी भारतीय रचनात्मक चेतना में सक्रिय बने हुए हैं जिसमें समसामयिक कलाकार भी राम के आलौकिक मर्यादित स्वरूप से प्रभावित होकर नित नवीन शैलियों एवं विधाओं में राम को चित्रित कर कला को आधुनिक संदर्भों में समृद्ध कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. वाल्मीकि – रामायण।
2. तुलसीदास – रामचरितमानस।
3. Kamban – Kambaramayanam
4. Ramanujan A. K. – “Three Hundred Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation.”
5. गोस्वामी, प्रेमचन्द (1997) ‘भारतीय कला के विविध स्वरूप’
6. यादव, रूपाली ‘चित्रकला की दृश्य अभिव्यक्तियाँ’ रामायण के संदर्भ में।
7. रानी, अर्चना—‘भारतीय चित्रकला में राम विषयक प्राचीन पाण्डुलिपियाँ’
8. रानी, अर्चना—‘राम विषयक साहित्य से समृद्ध भारतीय चित्रकला’
9. डा० नीरू (2021)—‘अकबर कालीन मुगल चित्रकला में रामायण का चित्रण’
10. उकास, तृप्ति (2020)— ‘भारतीय भाषाओं में राम (अध्ययन सामग्री)
11. मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध प्रबन्ध 2019)
12. प्रताप रीता (2021)— भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
13. <https://www.sahapedia.org>
14. <https://www.wikipedia.org>
15. <https://www.allstudyjournal.com>
16. <https://www.sahapedia-org2018>
17. Ignited minds journals (Ignited.in)
18. <https://www.saffronart.com>
19. <https://www.nationalmuseumindia.gov.in>